क्रांतिकारी आंदोलन में बॉम्बे की महिलाओं का योगदान : अवंतिकाबाई गोखले

Berani Shevang Parshotambhai
M.A.I, Department of History
Maharaja Krishnakumarsinhji Bhavnagar University,
Bhavnagar.
Gujarat.

1.प्रास्ताविक

महिलाओं के योगदान का वर्णन किए बिना भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अधूरा होगा। भारत की महिलाओं ने जो किया है वह अनमोल है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के बलिदान, परोपकार और वीरता की कहानियों से भरा पड़ा है। हम में से बहुत कम लोग जानते हैं कि ऐसी सैकड़ों महिलाएँ थीं जो अपने पुरुष समकक्षों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ीं। वे सच्ची भावना और अदम्य साहस के साथ लड़े। भारतीय महिलाओं ने विभिन्न प्रतिबंधों को तोड़ दिया और अपनी पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को छोड़ दिया। इसलिए स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जागरण में महिलाओं की भागीदारी अविश्वसनीय और सराहनीय है।

देशभर में स्वराज्य की गहन फैली साथ में महिला आंदोलन का स्वरूप बदलता रहा। सवों सदी के पहले दशक से लेकर 1940 दशक तक महिलाओं की राजनीतिक व भागेदारी कई पहलुओं से गुजरी।1900 दशक के दौरान 'स्वदेशी' आंदोलन ने जगह-जगह रंग जमाया। गुजरात, बंगाल, महाराष्ट्र व अन्य प्रान्तों में भारी तादाद में लोगों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने की प्रज्ञाली स्वदेशी प्रदर्शन आयोजित की गई स्वदेशी समर्थक खेले गए और विदेशी वस्तुओं का ढेरे लगाकर लोगों ने उन्हें जला दिया। इन कार्यक्रमा में महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई। उस समय महिला शिक्षित नहीं थीं घर-घर में तथाने का काम अधिक उत्साह से निभाषा घर-घर से राष्ट्रीय स्वदेशी फंड के लिए मुट्ठी भर आभूषणदान हुआ। विविध महिलाओं ने अपने-अपने क्षेत्र में भाषण दिये सभाको लाखों महिलाओं को स्वदेशी आंदोलन के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। गुजरात और महाराष्ट्र में अवतिकाबाई गोखले, रेसुबाई सावरकर, बाबा यशोदाबाई आगरकर और तिलक आदि प्रसिद्ध महिलओ जिन्होंने स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया।

2. प्रारभिक जीवन

अवंतिका बाई गोखले का जन्म तसगाँव में चितपावन ब्राह्मण माता-पिता के यहाँ हुआ था, और वे इंदौर में रहती थीं। उनकी शादी नौ साल की उम्र में बबन गोखले से हुई थी और उनके पति ने लंदन और चीन जाने से पहले उनकी शिक्षा शुरू की थी। उन्होंने 1901 में मिडवाइफरी में प्रथम श्रेणी की डिग्री प्राप्त की, और अपने दम पर व्यापक रूप से पढ़ीं। उनके पति ने 1898 और 1903 में मशीनों के संचालन के दौरान दो दुर्घटनाओं में अपनी उंगलियां खो दीं और अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए घर आ गए। वह तब एक दाई के रूप में अपने अभ्यास से कमा रही थी, और उन्होंने निःसंतान रहने का फैसला किया, क्योंकि वह अब एकमात्र कमाने वाली थी। उसके अभ्यास में धीरे-धीरे सुधार हुआ और 1912 में वह सोशल सर्विस लीग में शामिल हो गई। 1913 में वह इचलकरंजी के राजा और जी.के. गोखले, सरोजिनी नायडू और कई प्रमुख अंग्रेजों से मिले।

3. विविध सत्याग्रह में अवंतिकाबाई की भूमिका

अवंतिकाबाई गोखले को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में गांधीजी के पहले भारतीय शिष्य के रूप में जाना जाता है। गांधीजी और अवंतिकाबाई का परिचय उस समय के प्रसिद्ध दार्शनिक और विचारक श्रीनिवास शास्त्री ने कराया था। गांधी ने पहचान लिया कि यह महिला साधारण नहीं है। गांधीजी को लगा कि हम भारत में दलितों और महिलाओं के लिए जो काम करना चाहते हैं, उसके लिए इन कार्यकर्ताओं को हमारे साथ होना चाहिए।

अवंतिकाबाई अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ मराठी भाषा में भी धाराप्रवाह थीं, ने चंपारण के सत्याग्रह में गांधी का समर्थन किया। महिलाओं के व्यक्तिगत विकास और सशक्तिकरण के लिए, उन्होंने गिरगाँव में 'हिन्द महिला समाज' की स्थापना की और भारत में पहली बार महिला मिल श्रमिकों के लिए एक नर्सरी होम भी शुरू किया। इसके अलावा अस्पृश्य समाज में सुधार लाने के भी प्रयास किए गए। 1930 और 32 के नमक सत्याग्रह में मुंबई की सैकड़ों महिलाएँ शामिल हुईं। श्रेय महिलाओं को जाता है। वह एक ईमानदार, मुखर, अनुशासित कार्यकर्ता के रूप में स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक सम्मान का पृष्ठ रखते हैं

1927 में प्रकाशित आत्मकथा अथवा सत्य के प्रयोग से पहले गांधीजी के व्यक्तित्व और जीवन कार्यों की प्रेरणा से अवंतिकाबाई गोखले ने 'महात्मा गांधी यांचे चरित्र- विशेष परिचय, लेख व व्याख्यान' (महात्मा गांधी का जीवन चरित्र- विशेष परिचय, लेख एवं व्याख्यान) इस प्रथम मराठी जीवनी का प्रकाशन सन 1918 में हुआ था | गांधीजी की इस सर्वप्रथम मराठी जीवनी की विशेषता यह है कि इस जीवनी की प्रस्तावना लोकमान्य तिलक द्वारा लिखी गयी है |

3.1 चंपारण सत्याग्रह

1916 में लखनऊ कांग्रेस में वे गांधी जी की गाँठ थे। जब गांधी को बिहार के चंपारण के तराई के किसानों की दुर्दशा महसूस हुई, तो अवंतिकाबाई ने उनके साथ सत्याग्रह की ऐसी गुहार लगाई। आनंदी वैशम्पायन और अवंतिकाबाई गोखले या दोनों महिलाएं चंपारण के सत्याग्रह में भाग लेने के लिए महाराष्ट्र से सत्याग्रही थीं। फिरौन ने बिहार में महिलाओं को स्वास्थ्य पैक दिए। बालिका शिक्षा के लिए अभियान चलाया। लड़कियों के स्कूलों और महिलाओं के साथ पुरुषों के जुड़ाव का विरोध होता। तब अवंतिकाबाई ने उनमें लिखने, पढ़ने और देशभक्ति की भावना जगाने का कठिन काम किया। इ.स. 1919 में नासिक की एक सभा में अवंतिका बाई का भाषण सुनकर लोकमान्य तिलक द्रवित हो गए और उन्होंने अनायास कहा, "महाराष्ट्र की सरोजिनी तैयार है।"

3. 2 नमक सत्याग्रह

1930 में नमक सत्याग्रह आंदोलन के दौरान बंबई में सक्रिय नमक सत्याग्रह दस्तों के सक्रिय सदस्य। उन्होंने नमक अधिनियम के तहत नमक बनाने पर प्रतिबंध के उल्लंघन में शहर में कई सार्वजनिक नमक बनाने के कार्यक्रम आयोजित किए। उनके द्वारा बनाए गए नमक को 'स्वतंत्रता का नमक' कहा जाता था। वह उन महिला कार्यकर्ताओं में शामिल थीं, जिन्होंने 26 अक्टूबर 1930 को आजाद मैदान में सार्वजनिक रूप से झंडा फहराने के पुलिस के आदेश के खिलाफ भारतीय झंडा फहराया था, जिसके लिए उन्हें एक साल की जेल हुई थी। उन्होंने कई अन्य महिला कार्यकर्ताओं के साथ देश सेविका संघ के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जो शराब के कारोबार में भारी रूप से शामिल था, सरकार द्वारा संघ को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया था।

4. महिलाओं के विकास में अवंतिकाबाई का योगदान

मुंबई के गिरगाव में 27 नवंबर 1918 को 'हिंद महिला समाज' बनाकर उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के समानांतर स्त्री सशक्तिकरण में प्रमुख भूमिका निभाई थी |लगभग 38 वर्षों तक वे इस संगठन की अध्यक्ष रही | हिंदी महिला समाज के माध्यम से उन्होंने स्त्रियों को स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से सिलाई, कढ़ाई जैसे लघु उपक्रम सिखाने का काम किया जिसके माध्यम से शहरी स्त्रियों के लिए राष्ट्रीय आंदोलन के समानांतर रोजगार की एक जमीन भी तैयार हुई | सन 1926 से कुछ वर्षों तक के लिए वे मुंबई महानगर पालिका की सदस्या भी रही जिसके दौरान उन्होंने म्युनिसिपल अस्पतालों की सेवा सुविधाओं को बेहतर बनाने के साथ-साथ म्युनिसिपल कर्मचारियों की सुविधाओं के लिए भी अनेक कार्य किए | कांग्रेस की गतिविधियों में सहभागी होते हुए उन्हें 1920 से 1946 तक कई बार जेल जाना पड़ा था | गांधीजी द्वारा चलाए गए अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम में वे 1932 से सक्रीय सहभागी बनी रही | 24.09.1932 को गांधीजी और डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के बीच हुए ऐतिहासिक पुणे पैक्ट के दूसरे दिन के हिंदू सम्मलेन में इस पैक्ट के समर्थन में हस्ताक्षर करनेवाली महिलाओं में हंसा मेहता और अवंतिकाबाई गोखले थी |

1922 में, मुंबई नगर निगम ने महिलाओं के वोट देने और चुनाव लड़ने के अधिकार को मान्यता दी। सरोजिनी नायडू, बछुबेन लोटवाला, हेडगिवसन और अवंतिकाबाई अधिनियम के तहत चुनी गई चार महिलाएं थीं। इसमें अवंतिकाबाई को

भारी मत मिले थे। लेकिन कुछ तकनीकी कारणों से उनका चयन रद्द कर दिया गया। वामपंथियों के भारी समर्थन और उनके सामाजिक कार्यों को देखते हुए उन्हें 1 अप्रैल, 1923 को नगर निगम की स्वीकृत सदस्यता मिली। वह 1931 तक लगातार स्वीकृत सदस्य थीं। अपने निर्वाचन क्षेत्र में उन्होंने महानगरपालिका दन्नू सोदली के प्रश्न और संकल्प पूछे।अवंतिकाबाई ओरो की जीभ सेहत और शिक्षा दोनों को खा जाती है। स्कूल के आसपास अस्वास्थ्यकर खाद्य-पदार्थ न बेचना, चौपतिवार पर बैठकर हवा खाना, कागज, तिनके आदि खाना। वे हॉल में मराठी बोलते हैं। उनके भाषण और तर्कसंगत विचार उत्तेजक होते हैं, क्योंकि राष्ट्रपति ने उनसे अंग्रेजी में बोलने का अनुरोध किया था। उनका अंग्रेजी भाषण मराठी की तरह ही प्रभावी था।

7. अवंतिकाबाई गोखले मार्ग

उसने एक नगर निगम में भी काम किया और झुग्गी की स्थिति में सुधार से संबंधित गतिविधियों में शामिल थी। वर्तमान में ओपेरा हाउस, गिरगाँव के पास एक सड़क का नाम उनके नाम पर रखा गया है।

8. अवंतिकाबाईगोखले का देहांत

अवन्तिकाबाई गोखले का देहांत 26 मार्च 1949 को मुंबई में हुआ था | अवन्तिकाबाई पहली पीढ़ी की ऐसी गांधीवादी स्त्री थी जिन्होंने शहरी मध्यवर्गीयआधुनिक जीवनशैली को त्यागकर गाँधीजी के साथ राष्ट्रीय आंदोलन से जुडी थी |

9. समापन

भारत को आजादी दिलाने में बहुत सारी महिलाओं ने भाग लिया था जिसमे सरोजिनी नायडू, भीखाजी कामा, कस्तुरबा, अवंतिकाबाई , यशोदाबाई, उषा मेहता जैसी महिलाओं ने अपना योगदान दिया था। बॉम्बे में अवंतिकाबाई ने महिलाओं के विकास ,अस्पृश्यता निवारण, खादी प्रचार जेसे कही सारे कार्य में अपना योगदान दिया था।आजादी के 75 साल बाद भी भरतीयों के दिल में उन स्वतंत्रता सेनानियों महिलाओं के लिए आदर और सम्मान कम नहीं हुई हैं जिन्होंने भारत को स्वतंत्र करवाने में अपनी मुख्य भूमिका निभाई थी। अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। इन सभी स्वतंत्रता सेनानियों से जुड़ी सम्मान और साहस के साथ इनकी देशभक्ति कहानियां आज भी हमारे देश में गायी जाती है। इसके साथ ही इतिहास इस बात का भी गवाह है कि उस दौर में जहां महिला को पर्दों के पीछे रखा जाता था जब महिलाएं घर, परिवार और समाज के डर से दहलीज नहीं लांघती थी, उस दौर में देश की इन महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को आजाद करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी.

संदर्भ सूची:

1. गांधी, मोहनदास (1925) सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, हिंदी अनुवाद, त्रिवेदी काशीनाथ (1957) नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या 382-383

2.उषा बाला, भारत की वीरंगनाएँ, प्रविसूप्रम भारत सरकार, 2006

3. आशारानी व्होरा, महिलाएँ और स्वराज्य: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1988

4. ऋतधरा मिश्रा, भारत स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनाएं

5. सुभाष शर्मा, भारतीय महिलाएँ